IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण एवं निर्णय लेने की क्षमता में भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

1.बसुंधरा शुक्ला, शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान **vasus0668@gmail.com**

2.डॉ. राजश्री मठपाल - असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान.

सारांश

ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में महिलाओं का सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण विषय है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs) को महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का प्रमुख साधन माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण तथा निर्णय लेने की क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु 150 स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं का चयन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास तथा पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है।

कुंजी शब्द: स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक गतिशीलता, निर्णय क्षमता, ग्रामीण विकास।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। ग्रामीण महिलाएँ कृषि, पशुपालन, लघु एवं कुटीर उद्योगों, घरेलू उत्पादन तथा परिवार के सामाजिक और आर्थिक प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद लंबे समय तक उनकी भूमिका को औपचारिक रूप से मान्यता नहीं मिली तथा वे आर्थिक संसाधनों, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, संपत्ति के अधिकार, रोजगार के अवसरों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से अपेक्षाकृत वंचित रहीं। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, लैंगिक असमानता, अशिक्षा, गरीबी और सामाजिक रूढ़ियों ने महिलाओं की स्वतंत्रता और विकास की संभावनाओं को सीमित किया, जिसके परिणामस्वरूप वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पुरुषों पर निर्भर बनी रहीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार द्वारा महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम संचालित किए गए, किन्तु ग्रामीण महिलाओं तक इन योजनाओं का अपेक्षित लाभ पहुँचाने में कई चुनौतियाँ सामने आईं। इसी संदर्भ में स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups - SHGs) की अवधारणा एक

प्रभावी विकास मॉडल के रूप में उभरकर सामने आई। स्वयं सहायता समूह ऐसे छोटे, स्वैच्छिक एवं सामुदायिक समूह होते हैं जिनमें समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाली महिलाएँ संगठित होकर नियमित बचत करती हैं, सामूहिक निर्णय लेती हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर समूह निधि से ऋण प्राप्त करती हैं। यह व्यवस्था महिलाओं में आर्थिक अनुशासन, वित्तीय प्रबंधन, सामूहिक उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करती है।

प्रारंभिक स्तर पर स्वयं सहायता समूहों का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को बचत और ऋण की सुविधाएँ उपलब्ध कराना था, परन्तु समय के साथ इन समूहों की भूमिका केवल वित्तीय गतिविधियों तक सीमित नहीं रही। वर्तमान में SHGs ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के प्रभावी माध्यम बन चुके हैं। समूहों की नियमित बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, बैंकिंग सेवाओं से जुड़ाव तथा सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल और सामाजिक जागरूकता का विकास होता है। इसके साथ ही वे सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, स्वच्छता, पोषण और महिला अधिकारों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सक्षम होती हैं।

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ वे अपनी समस्याओं, अनुभवों और आवश्यकताओं को खुलकर व्यक्त कर सकती हैं। समूह आधारित गतिविधियाँ महिलाओं में सामूहिक चेतना और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देती हैं, जिससे वे सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा और अन्य सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध संगठित होकर आवाज उठा सकती हैं। इस प्रक्रिया में महिलाओं की सामाजिक पहचान और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वे समुदाय के विकास कार्यों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगती हैं।

महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में निर्णय लेने की क्षमता एक महत्वपूर्ण आयाम माना जाता है। निर्णय लेने की क्षमता से तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जिनमें महिलाएँ अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णयों में स्वतंत्र रूप से भागीदारी करती हैं। अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू व्यय, बचत, निवेश, कृषि गतिविधियों तथा सामाजिक कार्यक्रमों से संबंधित निर्णयों में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाने लगती हैं। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच और समूह आधारित सहयोग उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है, जिससे वे परिवार और समाज में अपनी बात को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाती हैं।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) तथा विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा स्वयं सहायता समूहों को ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण के प्रमुख उपकरण के रूप में अपनाया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप लाखों ग्रामीण महिलाएँ वित्तीय समावेशन, स्वरोजगार, उद्यमिता विकास तथा सामाजिक नेतृत्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। इसके बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में SHGs की प्रभावशीलता, महिलाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति में हुए परिवर्तन तथा निर्णय लेने की क्षमता पर उनके वास्तविक प्रभाव का निरंतर मूल्यांकन आवश्यक है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण तथा निर्णय लेने की क्षमता में भूमिका का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि SHGs किस प्रकार महिलाओं के आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक

गतिशीलता और निर्णयात्मक स्वायत्तता को प्रभावित करते हैं तथा ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को किस सीमा तक सुदृढ़ बनाते हैं।

साहित्य समीक्षा

स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups - SHGs) ग्रामीण भारत में महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण और निर्णय लेने की क्षमता के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरे हैं। विभिन्न अध्ययनों में यह रेखांकित किया गया है कि SHGs केवल बचत और ऋण तक सीमित संगठन नहीं हैं, बल्कि वे महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व, सामूहिक चेतना और सामाजिक भागीदारी को विकसित करने वाली संस्थाएँ हैं [1, 2, 3]।

ग्रामीण संदर्भ में, जहाँ महिलाएँ प्रायः पितृसत्तात्मक संरचनाओं, आर्थिक निर्भरता, अशिक्षा तथा सीमित सार्वजनिक उपस्थिति जैसी बाधाओं का सामना करती हैं, वहाँ स्वयं सहायता समूह उन्हें एक सामूहिक मंच प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से वे अपने अनुभव साझा करती हैं, समस्याओं की पहचान करती हैं तथा समाधान की दिशा में सक्रिय कदम उठाती हैं [4, 5]।

SHGs की कार्यप्रणाली सामान्यतः नियमित बचत, आंतरिक ऋण, बैंक लिंकेज, सामूहिक बैठकें तथा प्रशिक्षण गतिविधियों पर आधारित होती है। इन गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के बीच आर्थिक अनुशासन, पारस्परिक सहयोग तथा सामाजिक एकजुटता का विकास होता है [6, 7]। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ है कि SHGs में सक्रिय भागीदारी महिलाओं की पारिवारिक एवं सामुदायिक स्तर पर निर्णय लेने की क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू व्यय, आय-सृजन गतिविधियों तथा ग्राम स्तरीय सामाजिक मुद्दों पर उनकी भागीदारी और प्रभावशीलता में वृद्धि देखी गई है [8, 9]। इस प्रकार SHGs आर्थिक सशक्तिकरण को सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन से जोड़ने वाले एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरते हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण के संदर्भ में स्वयं सहायता समूह महिलाओं को घरेलू दायरे से बाहर निकालकर सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के लिए प्रेरित करते हैं। अनेक अध्ययनों में पाया गया है कि SHGs से जुड़ने के बाद महिलाओं में आत्मसम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा सामूहिक नेतृत्व की भावना में वृद्धि होती है [1, 10]। समूह बैठकों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएँ अपने अधिकारों, सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता तथा लैंगिक समानता जैसे मुद्दों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं, जिससे उनकी सामाजिक चेतना का विस्तार होता है [11, 12]। यह प्रक्रिया उन्हें पारंपरिक सामाजिक बंधनों को चुनौती देने तथा सामुदायिक जीवन में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाती है [13]।

निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि SHGs का एक केंद्रीय परिणाम माना जाता है। उपलब्ध शोध से संकेत मिलता है कि SHGs से जुड़ी महिलाएँ न केवल परिवार के भीतर आर्थिक एवं सामाजिक निर्णयों में अधिक भागीदारी करती हैं, बल्कि स्थानीय संस्थाओं, ग्राम सभाओं तथा विकास कार्यक्रमों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगती हैं [7, 8]। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच, ऋण प्रबंधन का अनुभव तथा समूह-आधारित विचार-विमर्श की प्रक्रिया उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है, जिससे वे स्वतंत्र एवं तर्कसंगत निर्णय लेने में अधिक सक्षम होती हैं

[2, 14]। इस प्रकार SHGs ग्रामीण महिलाओं को 'लाभार्थी' से 'निर्णायक भागीदार' में रूपांतरित करने की क्षमता रखते हैं [11]।

फिर भी, यह ध्यान देने योग्य है कि SHGs का प्रभाव सभी क्षेत्रों एवं समूहों में एक समान नहीं है। कई अध्ययनों ने प्रशिक्षण की कमी, सीमित बाजार पहुँच, ऋण वापसी की चुनौतियाँ, स्थानीय सत्ता-संरचनाओं का दबाव तथा औपचारिक संस्थाओं के साथ कमजोर समन्वय जैसी समस्याओं की ओर संकेत किया है [5, 6, 12]। अतः SHGs के प्रभाव का मूल्यांकन केवल आर्थिक उपलब्धियों के आधार पर नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक परिवर्तन, आत्मनिर्भरता तथा निर्णयात्मक स्वायत्तता जैसे बहुआयामी संकेतकों के आधार पर किया जाना चाहिए [3, 13]।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण तथा निर्णय लेने की क्षमता में भूमिका का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि SHGs किस प्रकार ग्रामीण महिलाओं के जीवन में आत्मविश्वास, सामाजिक भागीदारी, नेतृत्व विकास तथा निर्णयात्मक क्षमता का विस्तार करते हैं तथा किन परिस्थितियों में उनका प्रभाव अधिक सशक्त रूप में सामने आता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण एवं सामाजिक गतिशीलता पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी से आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

- अध्ययन क्षेत्र : उत्तर प्रदेश का बस्ती जनपद
- नमूना आकार : 150 महिलाएँ
- नमूना चयन : उद्देश्यपूर्ण एवं यादृच्छिक नमूनाकरण
- डेटा संग्रह : साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली
- सांख्यिकीय उपकरण : प्रतिशत विश्लेषण एवं औसत

परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका **1 :** स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन

परिवर्तन	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ी	118	78.67
आत्मविश्वास में वृद्धि	130	86.67
शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी	112	74.67
सामाजिक पहचान में वृद्धि	124	82.67
नेतृत्व क्षमता विकसित हुई	105	70.00

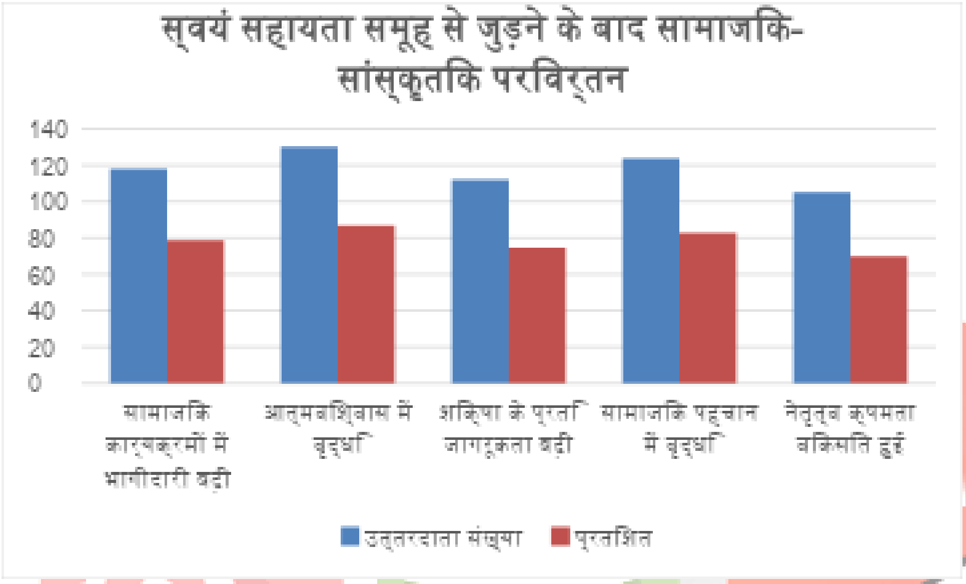

चित्र **1 :** स्वयं सहायता समूहों का संगठनात्मक ढाँचा

विश्लेषण :

तालिका से स्पष्ट है कि 86.67 प्रतिशत महिलाओं ने आत्मविश्वास में वृद्धि अनुभव की। 82.67 प्रतिशत महिलाओं ने सामाजिक पहचान में वृद्धि तथा 78.67 प्रतिशत महिलाओं ने सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ने की पुष्टि की। इससे स्पष्ट होता है कि SHGs महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका **2 :** निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन

निर्णय क्षेत्र	**SHG से पूर्व (%)**	**SHG से बाद (%)**
बच्चों की शिक्षा	38	81
स्वास्थ्य संबंधी निर्णय	35	79
घरेलू खर्च	42	85
बचत एवं निवेश	28	88
सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी	31	76

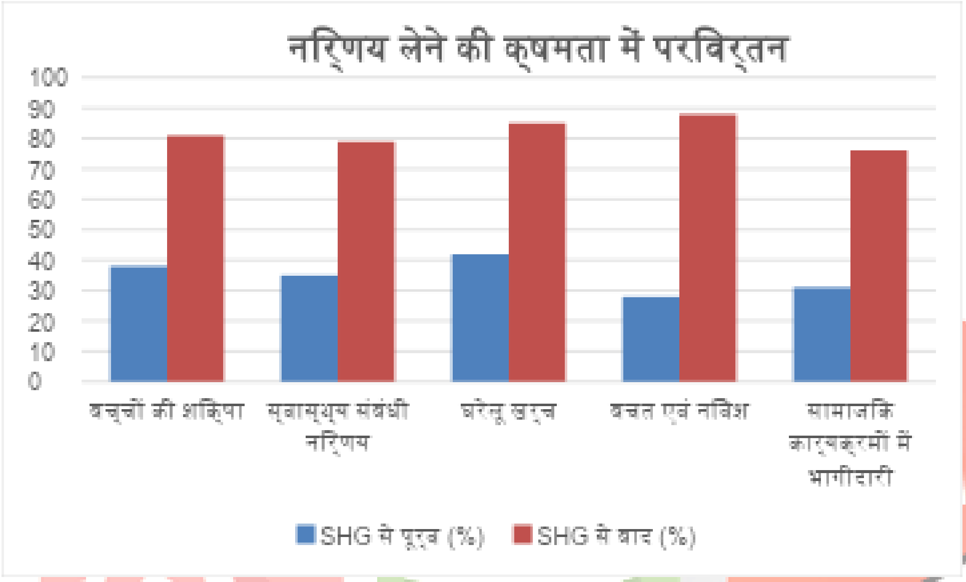

चित्र **2 :** अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

विश्लेषण **:**

तालिका से ज्ञात होता है कि SHG से जुड़ने के बाद महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बचत एवं निवेश संबंधी निर्णयों में भागीदारी 28 प्रतिशत से बढ़कर 88 प्रतिशत हो गई।

तालिका **3 :** सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव

संकेतक	सहमत (%)	असहमत (%)
घर से बाहर स्वतंत्र आवागमन	80	20
सरकारी योजनाओं की जानकारी	84	16
ग्राम सभा में सहभागिता	71	29
बैंकिंग सेवाओं का उपयोग	89	11

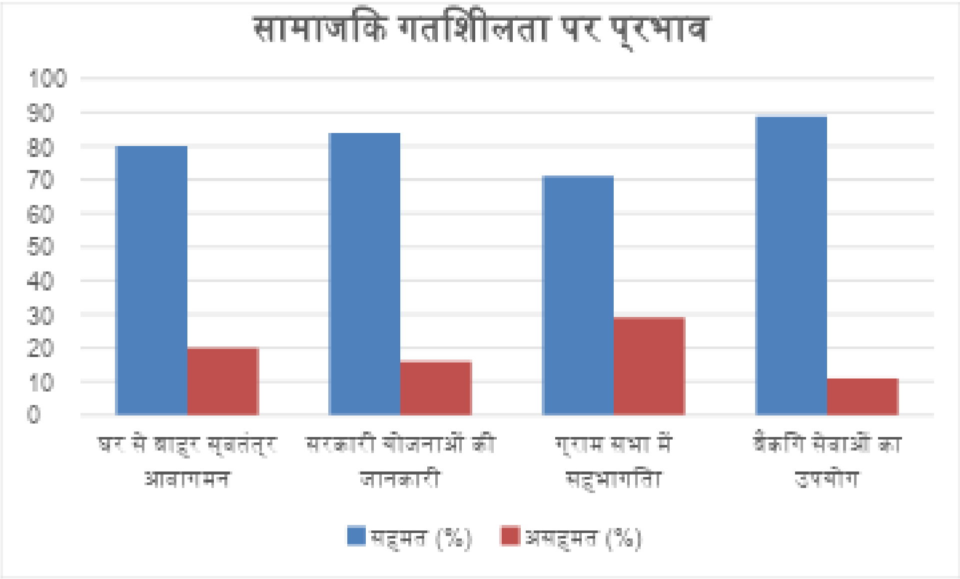

चित्र **3** : महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन

विश्लेषण :

89 प्रतिशत महिलाओं ने बैंकिंग सेवाओं के उपयोग में वृद्धि तथा 84 प्रतिशत महिलाओं ने सरकारी योजनाओं की जानकारी में सुधार की पुष्टि की। यह सामाजिक गतिशीलता के विस्तार को दर्शाता है।

तालिका **4** : निर्णय क्षमता का औसत स्कोर

आयाम	पूर्व औसत स्कोर	वर्तमान औसत स्कोर
आर्थिक निर्णय	2.1	4.3
पारिवारिक निर्णय	2.4	4.1
सामाजिक निर्णय	2.0	3.9

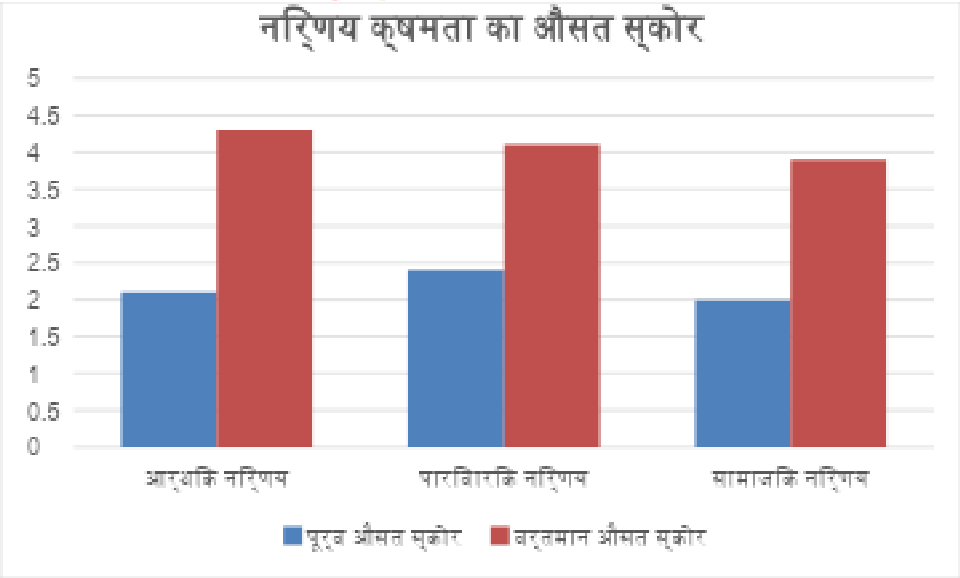

चित्र 4 : सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण के संकेतक

विश्लेषण :

औसत स्कोर में हुई वृद्धि से स्पष्ट है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं की निर्णय क्षमता को सुदृढ़ बनाने में प्रभावी सिद्ध हुए हैं।

चर्चा

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा एवं निर्णय क्षमता को भी सुदृढ़ किया है। समूह आधारित गतिविधियों ने महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा सामुदायिक सहभागिता को बढ़ाया है। परिणाम पूर्ववर्ती अध्ययनों के निष्कर्षों के अनुरूप हैं, जिनमें SHGs को महिला सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम माना गया है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक सशक्तिकरण तथा निर्णय लेने की क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। SHGs ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ सामाजिक पहचान, आत्मविश्वास और पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ाने में भी सहायता की है। अतः ग्रामीण विकास की योजनाओं में स्वयं सहायता समूहों को और अधिक सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

सुझाव

1. स्वयं सहायता समूहों को कौशल विकास प्रशिक्षण से जोड़ा जाए।
2. महिलाओं को डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता प्रदान की जाए।
3. समूहों को स्थानीय उद्यमिता विकास कार्यक्रमों से जोड़ा जाए।
4. ग्राम स्तर पर महिला नेतृत्व को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ

1. **Gautam, Vinita. "ग्रामीण क्षेत्र में महिला नेतृत्व विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका." *International Education and Research Journal*, vol. 10, no. 8, 2024, pp. 122–123.**
2. **"महिलाओं के आर्थिक स्थिति के उन्नयन में स्व-सहायता समूह की भूमिका." *Zenodo*, 19 Oct. 2024, zenodo.org/records/13956319.**
3. **"महिला सशक्तिकरण में स्वयं-सहायता समूहों की भूमिका का अध्ययन." *International Research Journal of Management Sociology & Humanities*, 31 Dec. 2019.**
4. **"स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण." *Ignited Minds Journals*.**
5. **"स्वयं सहायता समूह और ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण." *Dalvoy*.**
6. **"ग्रामीण महिला आर्थिक सशक्तिकरण एवं महिला स्वयं सहायता समूह: एक अध्ययन." *Social Research Foundation*, 24 Aug. 2022.**

7. **Pandey, Shashi. "स्वयं सहायता समूह, लघु ऋण एवं महिला सशक्तिकरण - एक अध्ययन."** ***International Journal of Advances in Social Sciences*, vol. 4, no. 2, 2016.**

8. **"स्वयं-सहायता समूह - अर्थ, उद्देश्य, महत्व और विशेषताएं."** ***Testbook*.**

9. **"ग्रामीण भारत में स्व-सहायता समूह (SHG) पहल जैसे ग्रामीण विकास कार्यक्रम लैंगिक समानता को कैसे बढ़ावा देते हैं?"** ***Testbook*.**

10. **Narang, Uma.** ***An Effective Approach to Women Empowerment in India*. 2012.**

11. **"महिला सशक्तिकरण के साधन के रूप में स्व-सहायता समूह."** ***NEXT IAS*, 19 May 2026.**

12. **"एसएचजी (SHGs) और विभिन्न समूहों और संघों ने भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण में कैसे योगदान दिया है."** ***PWOnlyIAS*, 4 Apr. 2024.**

13. **"ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का एक आर्थिक अध्ययन: मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में."** ***Ignited Minds Journals*, 31 Mar. 2025.**

14. **UmaMaheshwari, P.** ***A Study on Social Impact of Women Self Help Groups in Mettur*. 2013.**